शिक्षा मंत्रालय
भारत सरकार
MINISTRY OF EDUCATION
Government of India

काशी तमिल संगमम् 4.0
காசி தமிழ் சங்கமம்

Daily Bulletin
दैनिक बुलेटिन

Vol. 1, Issue 8 | 9 December 2025

nbt.india
एकः सूते सकलम्

तमिलनाडु से आया चौथा दल, डमरू वादन और पुष्पवर्षा से हुआ स्वागत, दल के सदस्य बोले– 'आध्यात्मिक नगरी में बहुत कुछ देखने और सीखने को मिलेगा'

काशी तमिल संगमम् 4.0 में तमिलनाडु से आने वाले आगंतुकों का सिलसिला जारी है। संगमम् में शामिल होने के लिए चौथा दल विशेष ट्रेन से बनारस रेलवे स्टेशन पर पहुँचा, जिसमें बड़ी संख्या में कृषि विशेषज्ञ शामिल थे। स्टेशन पर उतरते ही मेहमानों का पारंपरिक तरीके से डमरू वादन, पुष्पवर्षा और 'हर–हर महादेव' तथा 'वणक्कम् काशी' के उद्घोष के साथ भव्य स्वागत किया गया।

स्टेशन पर हुए इस पारंपरिक स्वागत को देखकर तमिल दल के सदस्यों में खासा उत्साह देखने को मिला। कई लोगों ने कहा कि काशी में मिल रही गर्मजोशी और आध्यात्मिक वातावरण उनके लिए अविस्मरणीय है। डमरू वादन की ध्वनि से पूरा परिसर शिवमय हो उठा और काशी व तमिलनाडु की सांस्कृतिक एकता की झलक साफ दिखाई दी।

दल के सदस्यों ने कहा कि काशी एक आध्यात्मिक नगरी है। यहाँ बाबा विश्वनाथ का दर्शन करने के बाद वे अकादमिक कार्यक्रमों में शामिल होंगे, जहाँ उन्हें बहुत कुछ सीखने और जानने का अवसर मिलेगा। कुछ ऐसे प्रतिनिधि भी दिखे जो काशी की धरती पर उतरते ही दंडवत लेट गए। उन्होंने कहा कि यह पवित्र भूमि है और यहाँ आकर उन्हें अत्यंत खुशी हुई है। दो राज्यों की संस्कृति और भाषा का यह मिलन प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी की 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' की परिकल्पना का मजबूत स्तंभ है।

लेखक–मीडिया एवं व्यावसायिक समूह ने सारनाथ तथा बीएचयू का किया दौरा

काशी तमिल संगमम् 4.0 के अंतर्गत आए लेखक–मीडिया तथा व्यावसायिक प्रतिनिधिमंडल ने आज काशी की सांस्कृतिक विरासत और ज्ञान–परंपरा से रूबरू होने के उद्देश्य से सारनाथ और बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के अंतर–संस्कृति अध्ययन केंद्र का भ्रमण किया। सुबह प्रतिनिधिमंडल ने सारनाथ पहुँचकर भगवान बुद्ध की तपोभूमि का अवलोकन किया। धम्मेख स्तूप, संग्रहालय और खंडहर क्षेत्र को देखते हुए अतिथियों ने बौद्ध कला, मौर्य–गुप्तकालीन मूर्तिकला तथा धर्मचक्र प्रवर्तन स्थल की ऐतिहासिक महत्ता को नज़दीक से समझा। कई लेखकों और पत्रकारों ने इस अनुभव को 'उत्तर और दक्षिण की आध्यात्मिक विरासत का जीवंत संगम' बताया। दोपहर में समूह ने बीएचयू के अंतर–संस्कृति अध्ययन केंद्र में आयोजित एक विशेष परिचर्चा में भाग लिया। केंद्र के विशेषज्ञों ने तमिल और काशी की दार्शनिक, भाषाई तथा सांस्कृतिक परंपराओं के साझा सूत्रों पर प्रकाश डाला। लेखक–मीडिया समूह के सदस्यों ने कहा कि काशी तमिल संगमम् केवल एक सांस्कृतिक आयोजन नहीं, बल्कि दो प्राचीन सभ्यताओं को जोड़ने वाला जीवंत पुल है। व्यावसायिक प्रतिनिधियों ने भी काशी के शोध–संस्थान, सांस्कृतिक उद्योगों और पर्यटन संभावनाओं में गहरी रुचि व्यक्त की।

Tamil Nadu Delegation Comprising Writers and Media Professionals Visits BHU

The Kashi–Tamil bond is a lived reality, nurtured and shaped over thousands of years through pilgrimage, devotion, literature, and intellectual as well as cultural exchanges. Kashi Tamil Sangamam is not only strengthening this millennia-old bond but also facilitating deeper engagement. The third academic session of Kashi Tamil Sangamam 4.0 deliberated on this cultural rootedness and civilizational continuity on Sunday, as writers, journalists, and media professionals engaged in an insightful discussion with experts at Banaras Hindu University.

The session, themed "Cultural Rootedness and Civilizational Continuity: Kashi–Tamil Connection," took place at the Pt. Omkarnath Thakur Auditorium, Faculty of Performing Arts, with a delegation of writers and media professionals from Tamil Nadu in attendance.

Shri Amitabh Bhattacharya, senior journalist based in Varanasi, described Kashi as home to nearly 272 religious and linguistic communities, making it pluralistic in the truest sense: "Banaras is a journey of pluralism." Prof. Sadanand Shahi, Former Head, Department of Hindi, spoke about reading the Hindi translation of Alvar poetry and the origins of the Bhakti movement. Referring to the theme of KTS 4.0, "Let's Learn Tamil – Tamil Karkalam," he emphasized the importance of learning Indian languages beyond one's mother tongue.

Other speakers included, Prof. Sisir Basu; Prof. A. Gangatharan; Prof. Sanjay Kumar; Ms. Hari Shwetha; Mr. Dilipan Phugal; Dr. Thulsiraman, Prof. Banibrata Mahanta; Dr. K. Lakshmanan; Dr. Vivek Singh; and Dr. Sharon Mano. Writers from the Tamil delegation

presented 14 books to dignitaries on the dais, to be donated to Banaras Hindu University.

The delegation also visited the Mahamana Archives, where they viewed the archives' exhibition. Several photographs on display piqued their curiosity. Prof. Dhruv Kumar Singh, Convener, Mahamana Archives, answered their questions regarding the photographs and letters. A panel specifically related to Tamil Nadu attracted significant attention. The delegation was particularly impressed by the copies of Dr. Sarvepalli Radhakrishnan's handwritten letters. During the visit, Prof. Sanjay Kumar, Coordinator, Malaviya Moolya Anusheelan Kendra, and Dr. Naveen Jain, Assistant Archivist, along with archive students, were present.

Earlier in the day, the delegation visited Bharat Kala Bhavan, where they viewed one of the museum's most prized bronze sculptures: a Chola-era bronze Nataraja statue, gifted to the museum in 1956 by the then Governor of Tamil Nadu, Sri Prakasa. The delegates observed the statue closely and gained deep insights into Shaiva philosophy and Chola craftsmanship.

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत की बाल गतिविधियाँ

काशी तमिल संगमम् 4.0 के अंतर्गत आज नमो घाट परिसर बच्चों की रचनात्मकता, उत्साह और साहित्यिक उमंग से सराबोर रहा। राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में बच्चों के लिए तीन रोचक सत्र आयोजित किए गए, जिनमें बड़ी संख्या में बच्चों, अभिभावकों और आगंतुकों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।पहला सत्र : 'एक समय की बात है' : कहानी सुनाने का अनोखा अंदाज़ था।दिन की शुरुआत प्रसिद्ध कहानी वाचक सीमा वाही की प्रभावशाली कहानी–वाचन सत्र से हुई। दूसरा सत्र : 'आओ लिखें कहानी' : दूसरे सत्र में बच्चों को स्वयं कहानी लिखने के लिए प्रोत्साहित किया गया। इस गतिविधि में बच्चों ने अपनी कल्पनाओं को शब्दों का रूप दिया। काशी तमिल संगमम् के अंतर्गत ऐसे कार्यक्रमों का उद्देश्य बच्चों में पढ़ने और लिखने की संस्कृति को बढ़ावा देना है, ताकि नई पीढ़ी साहित्य, ज्ञान और सीखने को जीवन का अभिन्न हिस्सा बना सके।

नमो घाट पर सांस्कृतिक रंगों की अनूठी छटा, काशी तमिल संगमम् 4.0 में विविध कलाओं का मनमोहक संगम

दोपहर 3 बजे से शाम 5:30 बजे तक चले इस बहुरंगी आयोजन में उत्तर और दक्षिण की भारतीय सांस्कृतिक विरासत का सुंदर संगम देखने को मिला। कार्यक्रम की शुरुआत विजय कपूर एंड ग्रुप, वाराणसी के सुरीले गायन से हुई, जिन्होंने 25 मिनट की अपनी प्रस्तुति में संगीत की मधुर लहरियाँ बिखेर दीं। इसके बाद तमिलनाडु समूह ने 10 मिनट का ऊर्जावान लोक नृत्य प्रस्तुत कर समा बांध दिया। तीसरी प्रस्तुति में अदिति जयसवाल एंड ग्रुप, वाराणसी ने 10 मिनट के लोक नृत्य से वातावरण में जोश भर दिया। इसके बाद अनन्या सिंह एवं ग्रुप, वाराणसी ने 10 मिनट की कथक नृत्य प्रस्तुति में लय, भाव और ताल की अद्भुत छटा बिखेरी। तत्पश्चात् सुक्ला दत्ता ने 'काशी वंदन' शीर्षक से 15 मिनट का मनोहारी कथक प्रस्तुत कर दर्शकों का दिल जीत लिया। कार्यक्रम का समापन पुनः तमिलनाडु समूह के 10 मिनट के लोक नृत्य से हुआ, जिसने काशी और तमिलनाडु की सांस्कृतिक मैत्री को और प्रगाढ़ किया।

காசியில் வளர்ந்து வரும் தமிழ் ஆர்வம் – சி.ஐ.ஐ.எல்'இன் முயற்சி!

வரலாறும் மொழியும் கை கோர்த்து நிற்கும் புனித காசியின் காற்றில், தமிழ் மொழியின் இனிய ஒலி மீண்டும் ஒலிக்கத் தொடங்கியுள்ளது. காசி தமிழ் சங்கமம் 4.0 நிகழ்வில், இந்திய மொழிகளின் நடுவண் நிறுவனம் (CIIL) சார்பில் நடைபெறும் தமிழ்க்கல்வி நடவடிக்கைகள் மாணவர்களிடையே பெரிய வரவேற்பைப் பெற்றுள்ளன.

சி.ஐ.ஐ.எல் குழுவைச் சேர்ந்த முனைவர் எஸ். சுந்தர்ராஜன் அவர்கள் மிகுந்த உற்சாகத்துடன் நிகழ்வில் தமிழ்ப் பயிற்சிகளை முன்னெடுத்து வருகிறார். "இந்த புனித காசியில், சி.ஐ.ஐ.எல்-ஐ பிரதிநிதித்துவப்படுத்தி தமிழைக் கற்பிப்பது எங்களுக்கு பெருமை! மாணவர்களின் ஆர்வம்தான் எங்களுக்கு மிகப் பெரிய ஊக்கமாக உள்ளது," என அவர் மகிழ்ச்சியுடன் தெரிவித்தார். எளிய சொற்களிலிருந்து அன்றாட உரையாடல் வரையிலான தமிழ்ப்பயிற்சிகள் இங்கு வழங்கப்படுகின்றன.

திருக்குறளை மணிப்புரி மொழிக்கு மொழிபெயர்த்த முனைவர் ரெபிக்கா தேவி அவர்கள், "ஒரு புதிய மொழியைக் கற்றால் புதிய உலகம் திறக்கிறது; அந்த புதிய உலகத்தை உருவாக்கிக் கொடுக்க தமிழ் முக்கிய பங்கு வகிக்கிறது," என குறிப்பிட்டார். தினமும் 500-க்கும் மேற்பட்ட மாணவர்களும் இளைஞர்களும் உற்சாகமாக தமிழ் கற்றல் செயல்பாடுகளில் பங்கேற்று வருகின்றனர். மொழிக் கற்றல் மட்டுமன்று, தமிழ் இலக்கியம், கலை,

பண்பாட்டு மரபுகள் குறித்த அறிவும் அவர்களுக்கு வழங்கப்படுகிறது.

காசியில் வளர்ந்து வரும் இந்த தமிழ் அலை, சி.ஐ.ஐ.எல் முன்னெடுத்து வரும் முயற்சியால் பரவலாகப் பரவி, புதிய தலைமுறைக்கு தமிழின் அழகையும் ஆழத்தையும் உணர்த்தி வருகிறது.

वाराणसी में नमो घाट पर दो संस्कृतियों का संगम, काशी तमिल संगमम् 4.0 में हुईं हिंदी–तमिल भाषा कक्षाएँ संचालित

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की प्रेरणा से काशी में सांस्कृतिक एकात्मता की नई धारा प्रवाहित हो रही है। काशी तमिल संगमम् 4.0 कार्यक्रम के अंतर्गत नमो घाट पर उत्तर और दक्षिण भारत की दो महान संस्कृतियों का साक्षात् मिलन देखने को मिल रहा है। इसी क्रम में शहर के दो प्रमुख शिक्षण संस्थानों–बंगाली टोला इंटर कॉलेज और दुर्गा चरण बालिका इंटर कॉलेज में तमिलनाडु से आए शिक्षकों तथा स्थानीय हिंदी शिक्षकों के संयुक्त प्रयास से हिंदी–तमिल सीखने की कक्षाएँ संचालित की जा रही हैं।

शिक्षकों ने इसे भाषा और संस्कृति के बीच सेतु निर्माण का महत्वपूर्ण कदम बताया। उनका कहना था कि इस पहल से दोनों राज्यों के विद्यार्थियों और शिक्षकों को एक–दूसरे की परंपराओं, भाषाई विरासत और जीवन–शैली को करीब से समझने का अवसर मिलेगा।

स्थानीय नागरिकों और छात्र–छात्राओं ने इन कक्षाओं के शुरू होने पर प्रसन्नता व्यक्त की और उम्मीद जताई कि यह प्रयास राष्ट्रीय एकता को और मजबूत करेगा। काशी तमिल संगमम् 4.0 के अंतर्गत चल रही यह पहल सांस्कृतिक सौहार्द और ज्ञान–विनिमय की दिशा में महत्वपूर्ण मानी जा रही है।

समाचार पत्रों की सुर्खियों में 'काशी तमिल संगमम् 4.0 - 2025

TN delegates immerse in Kashi culture, explore Subramaniam Bharati's legacy

काशी तमिल संगमम् 4.0 में आईआईटी मद्रास की 'विद्याशक्ति'

तमिल सीखने को नई दिशा देने वाली डिजिटल पहल

IIT Madras initiative takes Tamil learning to new heights

PIONEER NEWS SERVICE
Varanasi

The IIT Madras's innovative education initiative, 'Vidya Shakti,' at stall number 26 at Namo Ghat as part of Kashi Tamil Sangamam (KTS) 4.0, took Tamil language learning to new heights through digital media.

In line with the theme 'Tamil Karkalam' (Learn Tamil), this model demonstrated how the language can be made simple, interesting and accessible to all through simulations, gaming, quizzes and interactive digital content.

Launched in 2021 under the leadership of Dr Shiva (IIT Madras), this initiative is engaging in science, technology, engineering and mathematics education in 10 districts of Uttar Pradesh, conducting live Tamil classes daily from 2 to 2.30 pm to 650 schools, where students are taught basic vocabulary, pronunciation, everyday conversations and Tamil script recognition in a simple and intuitive manner.

As an extension of Tamil Karkalam, Vidya Shakti also conducts special classes for sanitary workers, NCC cadets, and students daily from 10 to 11 am. These classes teach sanitary workers work-related dialogues, cadets the command and parade terminology and students Tamil through charts based on the Flow Learn Model. This initiative is establishing Tamil as a practical language for life and work, not just a subject of study.

Vidya Shakti's influence has expanded to India and abroad. Today, the initiative is active in 7,210 villages across India and 5,000 villages across Sri Lanka. In UP, it was launched by Chief Minister Yogi Adityanath, while KTS has been involved in its first edition. Vidya Shakti received special recognition from Prime Minister Narendra Modi at the second and third editions. The document 'Solutions' presented to the PM details India's five major national challenges, addressing issues beyond education and addressing the nation's overall development.

In particular, Vidya Shakti's Digital Didi programme is making a unique effort to empower women, youth, first-generation college students, single mothers and eldest daughters across the country by providing them with digital skills training. Trained participants are paid Rs 2,000 per month for just one hour of daily contribution, establishing a direct link between digital education and livelihoods.

The IIT Madras and Vidya Shakti team expressed gratitude to the PM, KTS and the organising committee for the opportunity to present this innovative model of Tamil language, science, technology, engineering and mathematics education and digital empowerment on the sacred land of Kashi.

The team said that this initiative truly embodies the vision of 'Tamil Karkalam', where languages serve as a means of connecting people. This effort by Vidya Shakti further strengthens the spirit of 'Ek Bharat, Shreshtha Bharat' by unifying the linguistic and cultural diversity of the country.

हिंदी-तमिल में सहकार का संबंध

काशी-तमिल संगमम् में जीवनरक्षा का संदेश

तमिलनाडु में विश्वनाथ मंदिर काशी-तमिल सांस्कृतिक एकता का प्रमाण

दक्षिण की टूटी कड़ी जोड़ रहा काशी-तमिल संगमम्

जिलाधिकारी व अन्य अधिकारियों ने रामनगरी से अतिथियों को किया विदा

दक्षिण भारतीय भक्तों की काशी और अयोध्या दर्शन अभिलाषा पूरी

आस्था

शब्दसारथियों ने शब्दशिल्पी की संकल्पना सहेजी

यादगार स्वागत से मेहमान हुए अभिभूत

वाराणसी। काशी तमिल संगमम् में सहभागी बनने के लिए चौथा दल रविवार रात 11:30 बजे बनारस स्टेशन पहुंचा। सभी डेलिगेट्स एमजीआर चेन्नई सेंट्रल से काशी तमिल संगमम् स्पेशल (गाड़ी संख्या-06007) से रवाना हुए थे।

स्टेशन पर मेहमानों का पारंपरिक ढंग से स्वागत किया गया। गाड़ी से उतरते ही हर-हर महादेव के उद्घोष और पुष्प वर्षा के बीच अतिथियों का माल्यार्पण किया गया।

इस दौरान डमरू वादन से माहौल दिव्य हो उठा। यादगार स्वागत से मेहमान अभिभूत हो उठे। इन्हें बसों से होटलों तक पहुंचाया गया। इस दौरान पूर्वोत्तर रेलवे और आईआरसीटीसी के अधिकारी भी मौजूद रहे।

गंगा कावेरी @ 4.0 (7)

आजाद के लिए छद्म नाम से काम करते विद्यारण्य

- लंबे समय तक गृहत्याग कर जगाई आजादी की अलख
- पार्टी में तय मुद्दों को दूसरे क्रांतिकारियों तक पहुंचाते रहे

वाराणसी, मुख्य संवाददाता। काशी की दक्षिण भारतीय विभूति विद्यारण्य, चंद्रशेखर आजाद की पार्टी के लिए कई छद्म नामों से काम करते थे। पार्टी की मीटिंग में तय होने वाले मुद्दों की जानकारी दूसरे क्रांतिकारियों तक पहुंचाने की जिम्मेदारी वह लंबे समय तक निभाते रहे। इसके साथ अंग्रेजों के खिलाफ तैयार की जाने वाली रणनीति में उनकी भूमिका प्रमुख सलाहकार की होती थी।

बेनियाबाग में होने वाले फुटबाल टूर्नामेंट इन क्रांतिकारियों के मिलने का प्रमुख स्थान थे। टूर्नामेंट के दौरान दर्शक दीर्घा इन क्रांतिकारियों की मीटिंग की जगह थी। पूरे टूर्नामेंट के दौरान प्रमुख क्रांतिकारी विभिन्न टीमों के प्रबंधन का हिस्सा बन कर ठहरा करते थे। क्रांतिकारियों की जरूरतों की पूर्ति का जिम्मा टीम के अन्य सदस्यों का था। विद्यारण्य परिवार से मुखिया वी.आदिमूर्ति से प्रेरित होकर ही सुब्रमण्य भारती का जनेऊ तोड़ना, परिवार के सबसे छोटे सदस्य भीष्म के बाल मन को गहरे तक प्रभावित कर गया। जल्द ही वह भी आर्यसमाज की राह पर चल निकले। उन्होंने अपने जीवन में अलग ही धारा का पालन किया। लंबे अर्से के लिए उन्होंने गृहत्याग कर दिया था। इस दौरान बिना किसी दल अथवा संगठन से जुड़े स्वतंत्र रूप से नगर-नगर भ्रमण करते रहे। साहित्य अध्यापन से जीविका चलाते और स्वतंत्रता का महत्व जन-जन को बताते रहते। आप सोच रहे होंगे पहले और तीसरे पुत्र का जिक्र तो हुआ किंतु दूसरे पुत्र विद्याभास्कर की चर्चा क्यों नहीं हुई। इसकी वाजिब वजह यह कि विद्याभास्कर भी क्रांतिकारी ही थे लेकिन उन्होंने न तो नरम दल का साथ चुना और न ही गरम दल की सदस्यता ली। उनकी क्रांति कलम की धार से निकली। उन्होंने हिंदी पत्रकारिता के इतिहास में एक नहीं कई स्वर्ण अध्याय लिखे। (क्रमशः)

कल पढ़िए: विद्यामास्कर ने शैशवकाल में पाया स्वतंत्रता का संस्कार

सीपीआर से बचाई जा सकती है जान

वाराणसी, कार्यालय संवाददाता। बीएचयू के ओंकारनाथ ठाकुर ऑडिटोरियम में रविवार को संगमम् के तहत आयोजित शैक्षणिक सत्र में कार्डियो पल्मोनरी रिससिटेशन (सीपीआर) पर लाइव प्रस्तुति एवं प्रशिक्षण सत्र भी हुआ। डिमास्ट्रेशन सीपीआर विशेषज्ञ डॉ. शिवशक्ति प्रसाद द्विवेदी ने दिया। उन्होंने कहा कि हृदयगति रुकने के बाद शुरुआती 3-5 मिनट निर्णायक होते हैं। यदि इस दौरान सही तकनीक से सीपीआर दिया जाए तो जीवन बचाया जा सकता है। उन्होंने कहा कि सीपीआर एक आपातकालीन जीवनरक्षक प्रक्रिया है, जिसका उपयोग तब किया जाता है जब किसी व्यक्ति की हृदय गति या सांस अचानक रुक जाए। उन्होंने कहा कि सीपीआर किसी मेडिकल प्रोफेशनल की नहीं, हर आम नागरिक की जिम्मेदारी है। कार्यक्रम समन्वयक बीएचयू के रजिस्ट्रार डॉ. नीरज त्रिपाठी, नोडल अधिकारी अंचल श्रीवास्तव तथा आनंद श्रीवास्तव मौजूद थे। इसका तमिल अनुवाद डॉ.तुलसी रमन ने किया।

'पूर्वजों के पुण्य से काशी व अयोध्या दर्शन का सौभाग्य'

- पांच सौ साल के संघर्ष के बाद राम मंदिर का निर्माण अद्भुत है: प्रो. विजय भानु
- उत्तर-दक्षिण के सांस्कृतिक आदान-प्रदान पर पीएम को साधुवाद: प्रो. रामाराव

अयोध्या, संवाददाता। काशी तमिल संगमम -4 में हिस्सा लेने तमिलनाडु के विभिन्न शहरों से आए शैक्षिक संस्थानों के विशेषज्ञों के दल के लिए काशी से प्रयागराज होते हुए अयोध्या धाम तक का यह भ्रमण एक अविस्मरणीय घटना बन गयी है। उन्होंने कहा कि दक्षिण भारत के लोग अपने जीवनकाल में काशी की यात्रा हर हाल में करना चाहते हैं। हम लोग सौभाग्यशाली है कि काशी के गंगा स्नान के साथ त्रिवेणी संगम में स्नान और फिर अयोध्या में रामलला का दर्शन मिला। निश्चित ही यह हमारे पूर्वजों के पुण्य का प्रभाव है। इसी पुण्य के उदय होने के कारण भगवान की कृपा हुई। मद्रास में मनोविज्ञान विषय की प्रोफेसर डा. विजय भानु कहती हैं कि पांच सौ साल के संघर्ष के बाद राम मंदिर निर्माण एक अद्भुत एहसास है जिसको शब्दों में नहीं व्यक्त कर सकते हैं।

काशी तमिल संगमम के माध्यम से हम लोगों को यहां आने का मौका मिला। सबसे बड़ी बात है कि प्रयागराज और अयोध्या में दर्शन का सौभाग्य मिला। इसकी बहुत खुशी है। हमारे पूर्वजों का पुण्य अक्षय रहा होगा जिससे हम आ सके। तंजावुर के प्रो. रामाराव ने कहा कि उत्तर -दक्षिण के सांस्कृतिक आदान-प्रदान के लिए यह आयोजन बहुत उपयोगी है। यहां की व्यवस्था और प्रशासन एवं सबका व्यवहार बहुत ही प्रशंसनीय है।

कन्याकुमारी के डा. उदय कुमार ने कहा कि तमिल संगमम के माध्यम से काशी विश्वनाथ का दर्शन और प्रयागराज के साथ अयोध्या आने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। यह बहुत प्रसन्नता का विषय है। यहां आकर रामलला का दर्शन करके बहुत संतोष मिला। राम मंदिर का निर्माण भी बहुत सुंदर ढंग से किया गया है। यह यात्रा बहुत सुखद और यादगार रहेगी। कोयम्बतूर की प्रोफेसर चेनेला ने कहा रामलला के दर्शन से जो तृप्ति का एहसास हुआ है, उसके शब्द नहीं है। उन्होंने कहा कि हम लोग आम परिवार के सदस्य हैं लेकिन यहां जिस तरह से प्रोटोकाल के साथ वी आई पी ट्रीटमेंट दिया गया है, वह सरप्राइज करने वाला है। इसी तरह मद्रास से आई शिक्षिका डा. पुष्पवती ने कहा कि अयोध्या आकर लगा है हम अपने होमलैंड में पहुंच गये है।

काशी तमिल संगमम् 4.0 के चतुर्थ समूह ने काशी विश्वनाथ मंदिर में किया दर्शन–पूजन, तत्पश्चात अन्नक्षेत्र में ग्रहण किया श्री विश्वेश्वर का प्रसाद

काशी तमिल संगमम् 4.0 के चतुर्थ समूह के आगमन पर काशी विश्वनाथ मंदिर के शास्त्रियों ने पुष्पवर्षा, डमरू और वेदध्वनी के साथ सभी अतिथियों का स्वागत किया। सभी अतिथियों ने "हर हर महादेव" और "वणक्कम् काशी" के साथ श्री विश्वेश्वर के चरणों में अपनी श्रद्धा व्यक्त की।

स्वागत के उपरांत मंदिर प्रशासन द्वारा सभी सदस्यों को काशी विश्वनाथ धाम के भव्य कॉरिडोर का विस्तृत भ्रमण करवाया गया। भ्रमण के दौरान सभी ने धाम के ऐतिहासिक स्वरूप, स्थापत्य कला, नवनिर्मित सुविधाओं और निरंतर बढ़ती श्रद्धा–धारा के बारे में जानकारी प्राप्त की।

भ्रमण पूर्ण होने पर सभी अतिथियों के लिए मंदिर द्वारा संचालित अन्नक्षेत्र में दोपहर के भोजन की व्यवस्था की गई। अन्नक्षेत्र में परोसे गए प्रसाद ने सभी को काशी की सेवा–परंपरा और अतिथि–भावना का गहरा अनुभव कराया।